

---

# Shri Lakshmi Stuti 2

---

## श्रीलक्ष्मीस्तुतिः २

---

### Document Information



---

Text title : Lakshmi Stuti 2

File name : lakShmIstutiH2.itx

Category : devii, lakShmI, ApaTIkara

Location : doc\_devii

Author : ma. sa. ApaTIkara

Transliterated by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Proofread by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Description/comments : stotrapanchadashI by Shri M. S. Apatikar, Satara

Source : Sharada year 11, Vol 21-22, September 1970

Acknowledge-Permission: Pt. Vasant A. Gadgil, Sharada Gaurava Granthamala, 425 Sadashv  
Peth, Pune 30

Latest update : September 14, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose. Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

September 15, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीलक्ष्मीस्तुतिः २



(पृथ्वी)

पयोधितनये रमेऽमतसहोदर त्वां भजे  
दयामयि सदा दयां कुरु मयि त्वमेतावती ।  
कराम्बुजनिवासिनी भव सदा ममोद्धारिणी  
मदीयसदने सदा निवस पद्मनाभप्रिये ॥ १ ॥

सरोजवदनाम्बुजे सरसिजासनाधिष्ठिते  
सरोरुहपदाम्बुजे सरसिजोरुपद्मासने ।  
सरोजनयने सदा सरसिजप्रिये देवते  
मदन्तरनिवासिनी भव सदा जगन्मोहिनी ॥ २ ॥

नमामि हरिवल्लभां सकलभाग्यदामिन्दिरां  
भजामि भवतारिणीं सकलभक्तकामप्रदाम् ।  
स्तवीमि मनसा तथा स्तवनगायनैस्त्वां सदा  
भवामि नतमस्तकस्तव पुरो हिरण्यप्रदे ॥ ३ ॥

नमन्ति मुनिनां गणा नृपतयो महीपा अपि  
स्तुवन्ति विबुधास्तथा मनुजराक्षसास्त्वां सदा ।  
त्वयैव मधुसूदनो भवति देवि लक्ष्मीयुत-  
स्त्वया विरहितः प्रभुर्भवति वामनो सिन्धुजे ॥ ४ ॥

त्वमेव कृपया धनं वितर देवि दीने जने  
भवामि नतमस्तकस्तव पुरः सुरैः पूजिते ।  
अशेषभयनाशिनी त्वमसि शेषशय्याङ्गने  
नतोऽस्मि पदपङ्कजे तव च लक्ष्म्यतोऽहं सदा ॥ ५ ॥

सरोजवदने सदा तव कृपाकटाक्षं क्षिप  
स्मिताननसरोरुहे मधुतरां गिरं देहि मे ।  
ममाशिवविनाशिनी भव सदा सुचन्द्रानने

भवाब्धिसलिलाद् द्रुतं जननि तारयेमं जनम् ॥ ६ ॥


भ्रमामि भववालुकानिकरतप्तदेहः सदा  
कृपासलिलवर्षिणी भव दयाम्बुकादम्बिनी ।  
तवैव कृपया दयामयि मनः सदैवाऽस्तु मे  
स्वधर्मपरिपालने, कुरु च मां समर्थं जने ॥ ७ ॥

हिरण्मयि सुवर्णदे कनकदेवते पाहि मां  
प्रयच्छ सुधनं सदा विधनिने हिरण्याथिने ।  
त्वदीयचरणाम्बुजे सरसिजे मम प्रार्थना  
त्वया सह निरन्तरं वसतु मद्गृहे माधवः ॥ ८ ॥


लक्ष्मीस्तुतिमिमां रम्यां श्रद्धया यः पठेन्नरः ।  
विनाश्य विपदं तस्य लक्ष्मीः सौभाग्यदा भवेत् ॥ ९ ॥  
इति श्री आपटीकरविरचिता श्रीलक्ष्मीस्तुतिः समाप्ता ।

Encoded and proofread by Mandar Mali aryavrutta gmail.com

---

——  
*Shri Lakshmi Stuti 2*

pdf was typeset on September 15, 2019

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

